शिक्षक सशक्तिकरण एवं शिक्षा में गुणवत्ता सुधार

डॉ.शिरीष पाल सिंह
(सह प्रोफेसर)
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
वर्धा, (महाराष्ट्र)- ४४२००१

शिक्षा मनुष्य की अन्तनिर्हित शक्तियों का विकास करके उसे सुसंस्कृत बनाने वाली प्रकिया है। '' शिक्षा'' व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की प्रगति के साथ–साथ सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के लिए भी आवश्यक है। ''सुभाषित रत्नदोष'' में उचित ही लिखा है कि ''ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है, जो उसे समस्त तत्वों के मूल को जानने में सहायता करता हैं तथा सही कार्य करने की विधि बताता है। हमारे काव्य ''महाभारत'' में भी वर्णित हैं कि–विद्या के समान नेत्र तथा सत्य के समान कोई दूसरा तप नहीं हैं। '' शिक्षा'' विनय प्रदान करती हैं, विनय से पात्रता आती है, पात्रता से व्यक्ति धन अर्जन करता है, धन से धैर्य तथा अन्ततोगत्वा सुख की प्राप्ति होती है।

शिक्षा का नाम स्मरण करते ही शिक्षक की कल्पना स्वतः ही साकार हो उठती हैं। शिक्षक ही शिक्षा प्रकिया की सार्थकता को सिद्ध करता हैं। शिक्षा प्रकिया के तीन ध्रुवों में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है। आदिकाल से ही शिक्षक की तुलना ईश्वर से की जाती रही है। क्योंकि जिस प्रकृति का शिक्षक होगा, उसी प्रकृति का राष्ट्र का भविष्य होगा।

शिक्षा के सभी पक्षों में शिक्षक एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यहां तक कि शिक्षा का केन्द्र बिन्दु शिक्षक है। पाठ्यक्रम निर्माण, शिक्षण विधियों का निर्धारण छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन, छात्रों को प्रोत्साहित करना सभी कार्य शिक्षक की प्राथमिकताऐं हैं। इसके लिए आवश्यक हैं कि शिक्षक स्वयं चरित्रवान, प्रतिभाशाली तथा योग्य होना चाहिए। शिक्षक छात्रों का सच्चा मित्र तथा पथ प्रदर्शक हो, अपने आचरण द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षित करें तथा स्वयं श्रेष्ठ गुणों से युक्त हो।

शिक्षक का कार्य भविष्य की पीढ़ी का निर्माण करना है। इस हेतु शिक्षक को स्वयं सामर्थ्यवान तथा योग्यताधारी होना आवश्यक है। एक प्रभावी, शिक्षक से निम्न योग्यताओं की अपेक्षा की जा सकती है।

1. शिक्षक सद् आचरण सम्पन्न होना चाहिए।
2. शिक्षक ज्ञानवान, विवेकवान एवं संस्कार सम्पन्न हो।
3. शिक्षक प्रभावी सम्प्रेषण कला से युक्त हो।
4. शिक्षक का जीवन मूल्योन्मुखी हो तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों तथा विचारों में आस्था हों।
5. शिक्षक बाल मनोविज्ञान तथा किशोर मनोविज्ञान का ज्ञाता हो।

6. शिक्षक अपने छात्रों से आत्मीय सम्बंध रखता हो।
7. वह नवीन शिक्षण विधियों का ज्ञाता हो तथा इनका प्रयोग कुशलापूर्वक करने में समर्थ हो।
8. शिक्षक छात्रों को अभिप्रेरित करने में समर्थ हों।
9. शिक्षक अध्यापन केन्द्रित की अपेक्षा अध्ययन केन्द्रित व्यवस्था पर विश्वास रखता हों।
10. शिक्षक अपने विषय का ज्ञाता हो साथ ही विभिन्न विषयों की सामान्य जानकारी रखता हो।
11. शिक्षक सृजनशील हो।

उपरोक्त विशेषताओं से युक्त शिक्षक एक सशक्त, प्रभावी, योग्य तथा सम्मानीय शिक्षक कहलाता है। परन्तु आज शिक्षक शिष्य को योग्य सभ्य, तथा सुसंस्कृत नागरिक बनाने के उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक वहन नहीं कर पा रहे हैं। इसका प्रमुख कारण हैं शिक्षक को शिक्षण हेतु उन्नत परिस्थितियां उपलब्ध न हो पाना, शिक्षक पर प्रबंधतंत्रीय एवं राजनैतिक दबाव होना, स्वयं शिक्षक का अपने उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक न होना, शिक्षकों की शिक्षण के प्रति रूचि का अभाव शिक्षक प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त व्यक्तियों का चयन न हो पाना तथा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उचित रीति से संचालन का अभाव होना। शिक्षा प्रक्रिया को प्रेरक, बनाने हेतु तथा छात्रों के सर्वागीण विकास हेतु दक्ष शिक्षा व्यवस्था के साथ–साथ, दक्ष, कुशल एवं सशक्त शिक्षकों की नितांत आवश्यकता है।

शिक्षक सशक्तिकरण का अर्थ –

शिक्षक सशक्तिकरण वह प्रक्रिया हैं जिसमें संदर्भित शैक्षिक परिवेश के सापेक्ष शिक्षकों की योग्यता, क्षमता, सामर्थ्य, प्रभावशीलता, सृजनात्मकता, कल्पना, नियंत्रण, प्रबंधन, स्वमूल्यांकन एवं स्वसंयमन की क्षमताओं का संबंर्धन किया जाता है।

शिक्षक सशक्तिकरण आन्तरिक ऊर्जा का प्रश्न है वह न्यायाधीश की तरह निष्पक्ष, चिकित्सक की भांति सेवक, सन्यासी की तरह निर्भक, सेनानायक की तरह साहसी हो। शिक्षक सशकितकरण में यह तथ्य स्वीकृत मानकर चलना होता है कि शिक्षक की व्यावसायिक नैतिकता का आधार केवल सामाजिक तथा मानवीय गुण ही हो सकत हैं। ये गुण शिक्षक सशकितकरण हेतु शाश्वत है ताकि इन गुणों का सदैव महत्व रहा हैं।

शिक्षक सशक्तिकरण के विविध आयाम –

शिक्षक सशक्तिकरण एक बहु आयामी संकल्पना है। इसके अन्तर्गत शैक्षिक सुधारों के समस्त पक्षों का समावेश किया जाता है। शिक्षक सशक्तिकरण का मुद्दा शिक्षक की सामर्थ्य, प्रवीणता एवं उसकी प्रभाविता से प्रत्यक्षतः सम्बंधित है शिक्षा के नये प्रतिमान को स्वीकृत एवं

क्रियान्वित किए जाने के क्रम में एक बहुआयामी सशक्त शिक्षक की नितांत आवश्यकता होती है शिक्षक सशक्तिकरण के निम्न विविध आयाम है–

1. **विषय आधारित सशक्तिकरण**

एक सशक्त व प्रभावी शिक्षक को केवल यही जानकारी न हो कि '' कैसे पढ़ाया जाए'' अपितु उसे यह भी ज्ञान हो कि किस प्रकरण में क्या पढ़ाया जाना अपेक्षित है। प्रभावी शिक्षक को अपने विषय का ज्ञाता होने के साथ–साथ सभी अन्य विषयों का सामान्य ज्ञान भी होना चाहिए। प्रभावी शिक्षक अपने विषय की जानकारी के साथ–साथ सामान्य ज्ञान में भी प्रवीणता रखता हो जिससे वह विविध प्रकरणों की सुस्पष्ट व्याख्या करने के लिए विविध प्रसंगों, सन्दर्भो तथा उदाहरणों की सहज रूप में सहायता से सकता है।

2. **शैली आधारित सशक्तिकरण**–

शिक्षक की शैली आधारित सशक्तिकरण से तात्पर्य उसकी उस पहल से है जिसके माध्यम से वह विषयवस्तु एवं विद्यार्थी से प्रभावी सम्बंध स्थापित कर लेता है इसमें शिक्षक को संगठित व्यवहार की शैली अपनाने को प्रेरित किया जाता है जिससे वह शिक्षण में व्यवस्था, क्रमबद्धता, आत्मविश्वास का वरण कर लेता है। सशक्तिकरण द्वारा शिक्षकों को अपने व्यवहार में गतिशीता, नम्रता तथा सर्जनशीलता हेतु भी प्रेरित किया जाता है। जिससे वे नए मानक तथा प्रतिमान बनाने में समर्थ होते हैं, नए मार्ग पर चलते हैं तथा कुछ नया एवं भिन्न का सजृन करते हैं। फलस्वरूप विलक्षण ऊर्जा, उत्साह एवं शक्ति से विधार्थियों को अपनी ओर आकर्षित कर लते हैं।

3. **व्यवहार आधारित सशक्तिकरण**–

शिक्षक सशक्तिकरण का तीसरा आयाम उसका व्यवहार आधारित सशक्तिकरण है जिसके अन्तर्गत शिक्षक मुख्य रूप से नियोजन, अनुदेशन, सम्प्रेषण, प्रबंधन तथा मूल्यांकन की योग्यताऐं अर्जित करता है। स्पष्ट नियोजन, प्रभावी अनुदेशन, त्रुटिरहित सम्प्रेषण, प्रबन्धन तथा मूल्यांकन की योग्यत अर्जित करता है। स्पष्ट नियोजन, प्रभावी अनुदेशन, त्रुटि रहित सम्प्रेषण तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन एक सामान्य शिक्षक को सशक्त शिक्षक की ओर उन्मुख करता है।

शिक्षक सशक्तिकरण हेतु सुझाव –

शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु शिक्षक सशक्तिकरण की नितांत आवश्यकता है। शिक्षक सशक्तिकरण हेतु कुछ प्रयास निम्नलिखित है–

1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में गुणवत्ता के मानदण्डों का पालन कठोरता से किया जाएं।
2. शिक्षक कक्षा में अपने आचरण से शिक्षा प्रदान करें।

3. शिक्षक उत्साहवर्धक, सहयोगी तथा मानवीय बने जिससे विद्यार्थी अपनी संभावनाओं का पूर्ण विकास कर जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभाएं।
4. शिक्षक ऐसे व्यक्तियों के समूह का सक्रिय सदस्य बने, जो लगातार सामाजिक और व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सजगता से पाठ्चर्या सुधार में रत हों।
5. सीखना किस प्रकार होता है, इसकी समझ उसमें तो और वह सीखने के अनुकूल वातावरण बनाये।
6. शिक्षक ज्ञान को व्यक्तिगत अनुभव के रूप में समझे जो सीखने-सिखाने के साझे अनुभव के रूप में प्राप्त किया जाता है, न कि पाठ्यपुस्तकों के बाहृय यथार्थ के रूप में।
7. शिक्षक में भाषा की गहरी समझ और दक्षता हो।
8. वह अपनी आकांक्षाओं, स्व. समझ, क्षमताओं और रुझानों को पहचानें।
9. शिक्षक, छात्रों को कार्य के द्वारा विभिन्न विषयों का ज्ञान विविध मूल्यों तथा विविध कौशलों के विकास के साथ किस प्रकार प्राप्त होता है इसकी शिक्षा देना सीखें।
10. वह परामर्श के कौशल और क्षमताओं का विकास कर सकें ताकि बच्चों के शैक्षणिक, व्यक्तिगत और सामाजिक स्थितियों का समाधान सुझाने में उसे सुविधा हो।
11. शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण, ओरिएन्टेशन तथा रिफ्रेशर कोर्स संचालित किये जायें
12. शिक्षकों को दिए गए प्रशिक्षण का सैद्धांतिक तथा परीक्षा के माध्यम से मूल्यांकन न कर प्रत्येक कौशल का मूल्यांकन किया जाए।
13. शिक्षक प्रशिक्षण के लिए व्यवहारिक स्तर पर शोधों को प्रोत्साहन दिया जाये।
14. शिक्षक व्यवहार के मानदण्डों को पूर्व निश्चित करें तथा छात्रों से स्नेहिल एवं अनुशासित सान्निध्य रखें। उपरोक्त सभी तथ्यों का शिक्षण प्रशिक्षण में पालन होने के बाद न सिर्फ शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार होगा बल्कि सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था पर भी इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. के.पी. पाण्डेय- शिक्षक सशक्तिकरण- अपेक्षित प्रवीणताऐं तथा युक्तियों, अन्वेषिकाः शिक्षक शिक्षा की भारतीय पत्रिका, पेज 81-93
2. सिंह, शिरीष पाल (2008)- अध्यापक शिक्षा, दिल्ली- ऐ.पी.एच. पब्लिकेशन हाउस,
3. शिक्षक सशक्तिकरण- भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, सरस्वती कुंज, निरालानगर, लखनऊ।